१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

1

स्वर्ग, नरक, या कुछ नहीं?

2

१९५६ में बेल्जियन कांगो नागरिक - विद्रोह की जकड़ में था। डॉ पॉल कार्लसन का अस्पताल के राजद्रोही सेना के कब्जे में आ गया। अस्पताल में बहुत -से कर्मचारी मार डाले गए। दुर्भाग्य से डॉ कार्लसन उनके बीच थे। उनका अर्थरहित कत्ल करने के बाद जब उनका शरीर मिला, तब उनकी जेकट की जेब में नया -नियम मिला। उसके पृष्ठों में डॉक्टर ने दिनाँक लिखा था। उनको गोली मारने से पहले का वह दिन था, और उन्हों ने कलम से केवल एक शब्द लिखा था, 'शान्ति' । अत्याधिक दूर्भाग्यपूर्ण परिस्थितियों में शान्ति। मृत्यु के समय शान्ति। डॉ पॉल कार्लसन को ऐसी शान्ति किसने दी?

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

3

जब हम मृत्यु का सामना करते हैं तो क्या इसी प्रकार की अविश्वसनीय शान्ति हमारे लिए संभव है? जब मृत्यु आती है तो हमें बिखरने से कौन बचा सकता है? मृत्यु के संबंध में बहुत -से प्रश्न ऐसे हैं जिनका उत्तर नहीं है। जब एक व्यक्ति मरता है तो वास्तव में क्या होता है? क्या यह स्वर्ग है? या नरक? या कुछ भी नहीं? आप जानते है कि मौलिक शरीर का क्या होता है, परन्तु वह व्यक्ति कहाँ गया जो इसमें रहता था? जब लोग मरते हैं, तो क्या वे पूर्णरूप से जीवित नहीं रहते या क्या वे कहीं और रहते हैं?

4

मृत्यु का दर्द इतना झुलसा देने वाला होता है कि निराश होकर हम यह विश्वास करना चाहते हैं कि कोई ऐसा रास्ता है कि जिन्हें हम प्यार करते हैं वे वास्तव में नहीं गए हैं -- और फिर यदि हम खोज करते हैं, तो हम अब भी उनसे बात करने का एक रास्ता प्राप्त कर लेते हैं।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

5

कुछ प्रभावी आवाजें सुनी गई हैं जो हमें यह आश्वासन दिलाती हैं कि यह सब सच और संभव है। उदाहरण के लिए आत्मिक माध्यम जेम्स वैन प्राघ पर विचार कीजिए। उसकी पुस्तक स्वर्ग से बातें एक माध्यम का मृत्यु के बाद जीवन का संदेश है। लैरी किंग के कार्यकर्म में सम्मिलित होने के बाद यह उस पुस्तक बिक्री सूची में सर्वप्रथम आई।

6

मृत्यु के विषय में वास्तविक सच्चाई को जानकर हमारे हृदय रो उठते हैं और हमारे हृदय को शान्ति मिलती है जब हम कब्र का सामना करते हैं।

7

(दृश्य)

क्या इस विषय पर परमेश्वर के पास कहने के लिए कुछ है? जब हम मरते हैं तो क्या इस विषय में बाइबिल के पास कहने के लिए कुछ है? एक प्रभावशाली उत्तर है, हाँ !

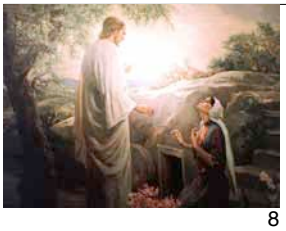

8

और यह उत्तर यीशु मसीह के पुनरुत्थान में मिलता है।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

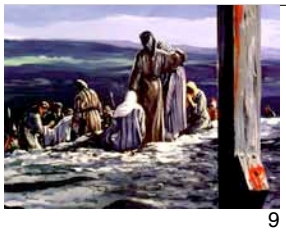

9

बाइबिल कहती है, क्रूस पर यीशु की मृत्यु के बाद, उसके मित्रों ने उसके शरीर को "यूसुफ की नई कब्र" में रखा।

10

रोमी शासक पिलातुस ने एक पहरेदार भेजा, और उसके सैनिकों ने कब्र के मुँह को एक पत्थर से बन्द कर दिया और उस पर रोमी मुहर लगा दी। अब उसका शरीर कोई नहीं ले जा सकता था। कोई नहीं, केवल मसीह का पिता ही।

11

रविवार की भोर को जब अंधेरा ही था, तब एक प्रकाशमान स्वर्गदूत स्वर्ग से उतरा, और उसने कब्र के दरवाजे पर रखे पत्थर को हटा कर मसीह को बाहर आने के लिए पुकारा।

12

जी उठा उद्धारकर्त्ता मृत्यु के ऊपर पूर्ण विजय प्राप्त करके बाहर आया - एक शक्तिशाली विजेता के रूप में।

उस स्वर्गदूत के तेज से सैनिक मृतकों के सदृश्य हो गए।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

13

मसीह के पुनरुत्थान की कहानी प्राचीन मसीही कलीसिया को खींचने वाली शक्ति थी - क्योंकि रोमी मृत्यु के बाद जीवन की कोई आशा नहीं करते थे। वे केवल यह बात जानते थे कि कब्र एक गहरा अंधेरा गड्ढ़ा है जिसके बाहर कोई भी फिर से जीवित आने की आशा नहीं कर सकता था। अब मसीहियों के पास सच्ची आशा का एक संदेश था। कब्र अंतिम अंत नहीं था। जो "मसीह में" मरते हैं वे एक दिन फिर से जीवित होंगे।

14

रोम शहर के नीचे बनाई गई कब्रें उस प्राचीन समय में मूर्तिपूजक की मृत्यु और मसीहियों की मृत्यु के बीच के अन्तर को दर्शाती है। जिन मूर्तिपूजक लोगों की आशारहित मृत्यु हो गई उनकी कब्रों के लेखों पर ध्यान दीजिए।

15

ये दु:ख भरे शब्द बार-बार लिखे गए: "सदा के लिए अंतिम नमस्कार" - या अनन्तकाल के लिए अंतिम नमस्कार।" फिर मसीहियों की कब्रों पर लिखे गए लेखों पर ध्यान दीजिए :

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

16

"नमस्कार जब तक हम फिर से न मिलें " या "सुबह होने तक शुभरात्रि"। उनकी कब्रों पर आशा और साहस के साथ लिखा गया है और उनकी कब्रें पुनरुत्थान के दिन की प्रतीक्षा कर रही हैं।

17

(मूलपाठ : प्रकाशित वाक्य १ : १८)
"मैं मर गया था, और देख, मैं युगानुयुग जीवता हूँ। आमीन।

18

और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे ही पास हैं।"

प्रकाशित वाक्य १ : १८

जब तक एक मसीही नहीं जानता कि परमेश्वर के पास उसके लिए क्या है तब तक मृत्यु के बाद भविष्य की कोई वास्तविक आशा नहीं।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

19

१ कुरिन्थियों का पन्द्रहवाँ अध्याय पौलुस का मृत्यु और पुनरुत्थान पर आशा भरा लेख है। वह बड़े विश्वास से कहता है कि पुनरुत्थान के बिना मसीही का कोई भविष्य नहीं है।"

प्रकाशित वाक्य १ : १८

जब तक एक मसीही नहीं जानता कि परमेश्वर के पास उसके लिए क्या है तब तक मृत्यु के बाद भविष्य की कोई वास्तविक आशा नहीं थी का मृत्यु और पुनरुत्थान पर एक विशेष लेख है। पौलुस का मृत्यु और पुनरुत्थान पर एक विशेष लेख हैं। वह स्पष्ट रूप से बताता है कि यदि पुनरुत्थान नहीं है, तो मसीहियों के लिए कोई भविष्य नहीं है।

20

(मूलपाठ : १ कुरिन्थियों १५ : १६ -१८)

ध्यान दीजिए उसने क्या कहा: "यदि मुर्दे नहीं जी उठते, तो मसीह भी नहीं जी उठा,

21

और यदि मसीह नहीं जी उठता, तो तुम्हारा विश्वास व्यर्थ है; और तुम अब तक अपने पापों में फंसे हो!""

22

वरन जो मसीह में सो गए है, वे भी नाश हुए।"

१ कुरिन्थियों १५ : १६ -१८

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

23

परन्तु यह समझने के लिए कि उसने क्यों कहा है जो उसने किया हमें यह समझने की आवश्यकता है कि बाइबिल मृत्यु के विषय में क्या सिखाती है।

24

जब परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया, तो वह कभी नहीं चाहता था कि कोई भी कभी मरे।

परमेश्वर ने आदम को बनाने के बाद देखा कि उसने क्या बनाया है और बाइबिल हमें उत्पत्ति १:३२ में बताती है कि सबकुछ बहुत अच्छा था!

पृथ्वी ग्रह पर आदम और हव्वा के गिरने (पाप करने) से पूर्व मृत्यु, बिमारी या दुःख नहीं था। फिर भी आप स्मरण करेंगे कि परमेश्वर ने मनुष्य जाति से क्या कहा:

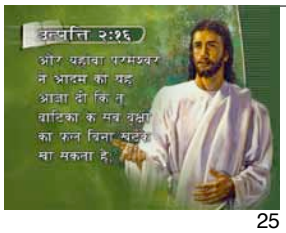

25

(मूलपाठ : उत्पत्ति २ : १६, १७)

"और यहोवा परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी कि तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है;

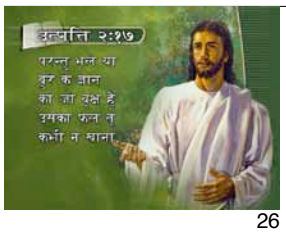

26

परन्तु भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है उसका फल तू कभी न खाना,

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

27

क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा।"

उत्पत्ति २ : १६ ,१७

28

कहानी का अगला अध्याय इतना आनन्ददायक नहीं है। यह दु:खदायी कहानी उत्पत्ति की पुस्तक अध्याय तीन में हमारे लिए अभिलेखित की गई है, अध्याय ३ ।

29

शैतान सर्प को माध्यम बनाकर हव्वा के समक्ष उपस्थित हुआ और परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने और मना किए गए पेड़ का फल खाने के लिए उसे बहकाया। जब हव्वा ने यह समझाया कि परमेश्वर ने उसे कहा था कि इस वृक्ष का फल न खाना नहीं तो मर जाएगी।

30

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : ४)

सर्प ने कहा, "तुम निश्चय न मरोगे।"

(पद ४)

यह मृत्यु के विषय में प्रथम झूठ था जो बाइबिल में अभिलेखित किया गया था!

हव्वा ने शैतान पर विश्वास करने को चुना और अच्छे तथा बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल खा लिया।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

31

परमेश्वर आदम और हव्वा को जीवन के वृक्ष से अलग करने के लिए विवश हो गया था क्योंकि :

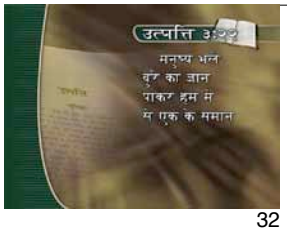

32

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : २२,२३)

"---- मनुष्य भले बुरे का ज्ञान पाकर हम में से एक के समान हो गया है।

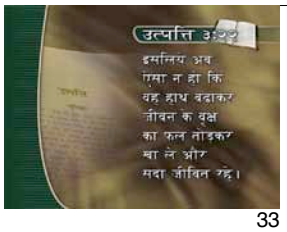

33

इसलिये अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर जीवन के वृक्ष का फल तोड़कर खा ले और सदा जीवित रहे।

34

तब यहोवा परमेश्वर ने उसको अदन की वाटिका में से निकाल दिया

35

कि वह उस भूमि पर खेती करे जिस में से वह बनाया गया था।"

उत्पत्ति ३ : २२ ,२३

36

मनुष्य जाति के ऊपर मृत्यु आई क्योंकि वह परमेश्वर से अलग किया गया, जीवन के स्त्रोत से और जीवन के वृक्ष से।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

37

(मूलपाठ : उत्पत्ति ३ : १८, १९)
इस समय परमेश्वर ने आदम से कहा : "----तू खेत की उपज खाएगा।

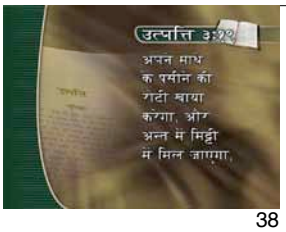

38

"अपने माथे के पसीने की रोटी खाया करेगा, और अन्त में मिट्टी में मिल जाएगा,

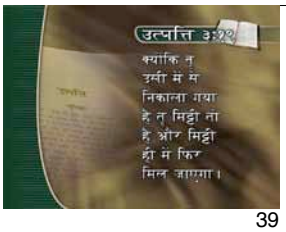

39

क्योंकि तू उसी में से निकाला गया है तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।" उत्पत्ति ३ : १८, १९

40

यहाँ यह समझने की आवश्यकता है कि मृत्यु क्या है और हमें अन्त तक उससे अलग होने के लिए तथा उस से बचाने के लिए परमेश्वर क्या करना चाहता है।

41

बाइबिल कहती है कि मनुष्य मिट्टी में लौट जाएगा जिस में से वह निकाला गया है। ध्यान दीजिए परमेश्वर ने आदम को कैसे बनाया था :

42

(मूलपाठ : उत्पत्ति २ : ७)
"और यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा,

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

43

और उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया और आदम जीवता प्राणी बन गया।"

उत्पत्ति २ : ७

44

परमेश्वर ने पृथ्वी के पदार्थों को लिया और मनुष्य का शरीर बनाया। जब उसने मनुष्य के शरीर को आकार देना समाप्त कर दिया, तब उसके पास केवल एक शरीर था उसे जीवित प्राणी बनाने के लिए उसे कुछ और चाहिए था। बाइबिल यहाँ कहती है कि परमेश्वर ने आदम के नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया और मनुष्य जीवित प्राणी बन गया।

45

(दृश्य)

हम इसे बनाने का समीकरण इस प्रकार करते हैं:

शरीर

+

श्वास

= एक जीवित आत्मा।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

46

(दृश्य)

या मृत्यु के लिए हम लिख सकते हैं

जीवित व्यक्ति

-श्वास

=मृतक शरीर।

47

(मूलपाठ : सभोपदेशक १२ : ७)

यही बात है जिसे बुद्धिमान मनुष्य ने सभोपदेशक में कहा था: "तब मिट्टी ज्यों की त्यों मिट्टी में मिल जाएगी, और आत्मा परमेश्वर के पास जिस ने उसे दिया लौट जाएगी।"

सभोपदेशक १२ : ७

48

अतिआवश्यक रूप से यही बात बाइबिल की पुस्तकों में से लिखी जानी जाने वाढ़ली प्रथम पुस्तक अय्यूब में है जो मृत्यु के विषय में यह कहती है।

49

(मूलपाठ : अय्यूब २७ : ३)

"क्योंकि अब तक मेरी सांस बराबर आती है, और ईश्वर का आत्मा मेरे नथुनों में बना है।"

अय्यूब २७ : ३

ध्यान दीजिए बाइबिल यह कहती है, "क्योंकि अब तक ईश्वर का आत्मा मेरे नथुनों में बना है।"

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

50

यही वह है जिसे परमेश्वर ने मनुष्य के नथुनों में डाला था जब उसने उसे बनाया था।

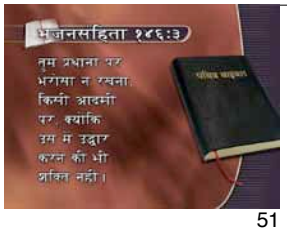

51

(मूलपाठ : भजनसंहिता १४६ : ३,४)

अन्य मूलपाठ पर दृष्टि डालें : "तुम प्रधानो पर भरोसा न रखना, किसी आदमी पर, क्योंकि उस में उद्धार करने की भी शक्ति नहीं।"

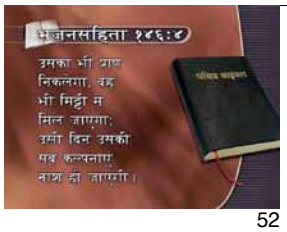

52

उसका भी प्राण निकलेगा, वह भी मिट्टी में मिल जाएगा; उसी दिन उसकी सब कल्पनाएं नाश हो जाएंगी।"

भजनसंहिता १४६ : ३, ४

53

दाऊद राजा मृत्यु के विषय में सच्चाई बताता है कि जब श्वास शरीर को छोड़ देती है और तब वह पृथ्वी को शरीर लौटा देती है। मनुष्य मर जाता है।

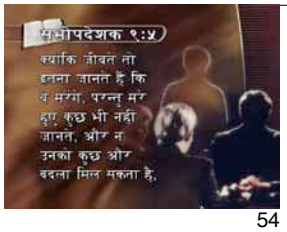

54

(मूलपाठ : सभोपदेशक ९ : ५,६)

यह बात जो सुलेमान ने कही उससे मिलती है : "क्योंकि जीवते तो इतना जानते हैं कि वे मरेंगे, परन्तु मरे हुए कुछ भी नहीं जानते, और न उनको कुछ और बदला मिल सकता है,

55

क्योंकि उनका स्मरण मिट गया है।

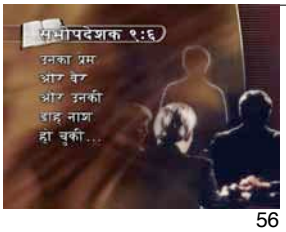

56

"उनका प्रेम और बैर और उनकी डाह नाश हो चुकी---"

सभोपदेशक ९:५,६

57

(दृश्य)

वह कुछ नहीं जानता!

नहीं!

नहीं कुछ नहीं!

भजनसंहिता के लेखक ने जो लिखा है उस से यह बात मिलती है कि मृतक स्वर्ग में नहीं है और परमेश्वर की प्रशंसा नहीं कर रहे हैं। तब, आप पूछ सकते हैं, वे कहाँ हैं?

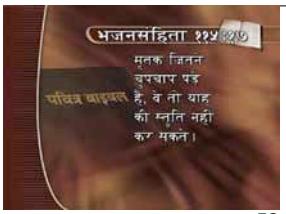

58

(मूलपाठ : भजनसंहिता ११५ : १७)

दाऊद इसे स्पष्ट करता है: "मृतक जितने चुपचाप पड़े हैं, वे तो याह की स्तुति नहीं कर सकते।"

भजनसंहिता ११५ : १७

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

59

(मूलपाठ : अय्यूब १४ : १०, १२, १३)

"परन्तु पुरूष मर जाता, और पड़ा रहता है; जब उसका प्राण छूट गया, तब वह कहाँ रहा?"

60

वैसे ही मनुष्य लेट जाता और फिर नहीं उठता; जब तक आकाश बना रहेगा,

61

तब तक वह न जागेगा, और न उसकी नींद टूटेगी।

62

भला होता कि तू मुझे अधोलोक में छिपा लेता, और जब तक तेरा कोप ठंडा न हो जाए तब तक मुझे छिपाए रखता,

63

और मेरे लिए समय नियुक्त करके फिर मेरी सुधि लेता!"

अय्यूब १४ : १०, १२, १३

64

हम परमेश्वर के वचन में यह पाते हैं कि मनुष्य मरता है और कब्र में सो जाता है। और पुनरुत्थान के दिन तक वह नहीं उठता:

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

65

(मूलपाठ : अय्यूब १४ : १४, १५)

"यदि मनुष्य मर जाए तो क्या वह फिर जीवित होगा? जब तक मेरा छुटकारा न होता तब तक मैं अपनी कठिन सेवा के सारे दिन आशा लगाए रहता।

66

तू मुझे बुलाता और मैं बोलता ..."

अय्यूब १४ : १४, १५

67

(मूलपाठ : अय्यूब १७ : १३)

ध्यान दीजिए अय्यूब हम से जो कहता है: "यदि मेरी आशा यह हो कि अधोलोक मेरा धाम होगा, यदि मैं ने अन्धियारे में अपना बिछौना बिछा लिया है।"

अय्यूब १७ : १३

68

यह भी ध्यान दीजिए कि अय्यूब ने मृत्यु के विषय में बात करते समय नींद शब्द का प्रयोग किया है।

और यही बात बाइबिल के दूसरे लेखकों ने भी की है।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

69

(मूलपाठ भजनसंहिता १३ : ३)

"हे मेरे परमेश्वर यहोवा मेरी ओर ध्यान दे और मुझे उत्तर दे। मेरी आँखो में ज्योति आने दे, नहीं तो मुझे मृत्यु की नींद आ जाएगी।"

भजनसंहिता १३:३

दाऊद मृत्यु की नींद सोने के लिए डरता था – वह जीना चाहता था!

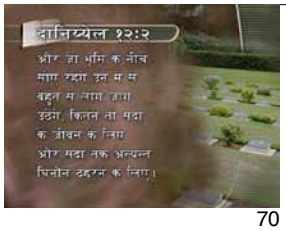

70

(मूलपाठ : दानिय्येल १२ : २)

दानिय्येल उन मृतकों के विषय में बताता है जो जी उठेंगे : "और जो भूमि के नीचे सोए रहेंगे उन में से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिए और सदा तक अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिए।"

दानिय्येल १२ : २

71

परमेश्वर के वचन में सबसे दिलासा देने वाली सच्चाई यह है कि जब एक व्यक्ति मर जाता है तो वह स्त्री हो या पुरूष चुपचाप आराम करता है, और जीवन की समस्यायें उसे व्याकुल नहीं करतीं जब तक जीवन देने वाला उसे न पुकारे। क्या यह कोई आश्चर्य की बात है बाईबिल मृत्यु का संबंध नींद से बताती है?

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

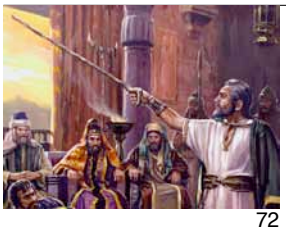

72

भविष्यवक्ता नातान ने दाऊद राजा को बताया कि जब उसकी मृत्यु का समय आएगा तो उसके साथ क्या होगा।

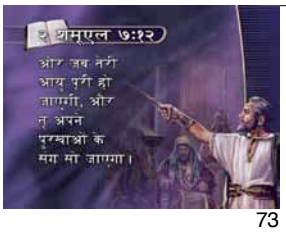

73

(मूलपाठः २ शमूएल ७:१२)

"और जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी, और तू अपने पुरखाओं के संग सो जाएगा।"

२ शमूएल ७:१२

74

यीशु ने स्वयं मृत्यु को नींद कहा।

उन्होंने उन्हीं शब्दों का प्रयोग किया जो उन्होंने अपने प्रिय मित्र लाजर की मृत्यु के लिये किया था। आइए, दृष्टि डालते हैं कि किस प्रकार यीशु और उसके घनिष्ट साथियों ने मृत्यु के विषय में कहा। बैतनिय्याह में लाजर, मरियम और मार्था का घर था जहाँ यीशु प्रायः उनसे मिलने जाते थे।

75

(मूलपाठ : यूहन्ना ११ : ५)

बाइबिल कहती है, "और यीशु मार्था और उसकी बहन और लाजर से प्रेम करता था।"

यूहन्ना ११ : ५

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

76

एक दिन जब यीशु और उसके चेले यरदन नदी के पास थे, तब उन्होंने बैतनिय्याह में उनके तीन साथियों से एक अति आवश्यक संदेश प्राप्त किया कि लाजर बहुत बीमार था, परन्तु यीशु जहाँ थे वहाँ दो दिन और रुक गए।

77

(मूलपाठ : यूहन्ना ११ : ११, १२, १४, १५)
तब यीशु ने कहा, "हमारा मित्र लाजर सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूँ।"

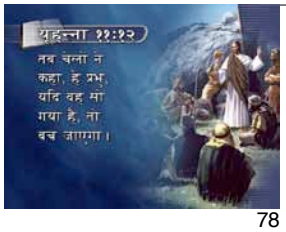

78

चेले बहुत प्रसन्न हो गए, उन्होंने कहा, "हे प्रभु, यदि वह सो गया है, तो बच जाएगा!"

79

"तब यीशु ने उन से साफ कह दिया, कि लाजर मर गया है।

80

और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूँ कि मैं वहाँ न था जिससे तुम विश्वास करो, परन्तु अब आओ, हम उसके पास चलें।"

यूहन्ना ११ : ११ -१५

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

81

वे बैतनिय्याह के रास्ते गए जहाँ वह परिवार रहता था। जैसे ही वे उस नगर में पहुँचे, मार्था दौड़कर उनसे मिलने आई।

82

(मूलपाठ : यूहन्ना ११ : २१,२३, २४)

जब वह यीशु से मिली उसने कहा हे प्रभु, यदि तू यहाँ होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता।"

यूहन्ना ११ : २१

इसमें कोई शंका नहीं थी कि वह इस विषय में सही थी! परन्तु यीशु के पास एक योजना थी।

83

उसने कहा, "तेरा भाई जी उठेगा।"

अब मार्था के उत्तर पर ध्यान दीजिए:

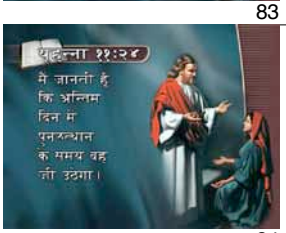

84

"मैं जानती हूँ कि अन्तिम दिन में पुनरुत्थान के समय वह जी उठेगा।"

यूहन्ना ११ : २३ -२४

मार्था ने यीशु को आश्वासन दिया कि वह यह आशा करती थी कि दुनिया के अंत में पुनरुत्थान के समय वह लाजर को देखेगी।

85

यीशु उस घटना की एक अनोखी झलक दिखाने वाले थे।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

86

(मूलपाठ : यूहन्ना ११ : २५)

तब यीशु ने साफ कह दिया : "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ जो कोई मुझ पर विश्वास करता है यदि वह मर भी जाए, तौभी जीएगा।"

यूहन्ना ११ : २५

87

यूहन्ना हमें बताता है, जब यीशु लाजर की कब्र पर आए

88

(मूलपाठ : यूहन्ना ११ : ३५)

कि यीशु के आँसू बहने लगे!

वे अपने मित्र लाजर के लिए नहीं रो रहे थे। वे जानते थे कि वे उसे जीवित करने वाले थे।

89

वे उसके परिवार और मित्रों के दुःख के कारण रो रहे थे और उन सब के लिए जो भविष्य में दुःखी होंगे जब वे अपने प्रिय जनों को खोएंगे।

90

यीशु ने कहा कि उस बन्द प्रवेश द्वार के पत्थर को

91

हटाया जाए।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

92

(मूलपाठः यूहन्ना ११:३९)

यीशु के निवेदन पर चिन्तित होते हुए मार्था ने प्रश्न कियाः "... परन्तु, हे प्रभु...उस में से अब तो दुर्गन्ध आती है, क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए हैं।"

यूहन्ना ११:३९

हाँ , यीशु ने बैतनिय्याह जाने में चार दिनों की देर की। यह देरी लाजरस के सचमुच न मरने की शंका को दूर करने के लिये थी।

93

परन्तु पत्थर लुड़काकर दूर कर दिया गया था, और यीशु ने जोर से पुकार कर कहा, "लाजर बाहर आ! "

94

किसी ने कहा है कि यह अच्छा हुआ कि यीशु ने विशेष रूप से केवल लाजर से ही कहा, नहीं तो पृथ्वी की प्रत्येक कब्र खुल गई होती!

95

बैतनिय्याह में उन तीन मित्रों के लिए वह दिन कितनी प्रसन्नता का रहा होगा!

मित्रों, बैतनिय्याह में वह एक उल्लास भरा दिन था,

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

96

परन्तु यह उस महिमा और उल्लास की केवल एक छोटी-सी झलकी थी जो उस दिन अनुभव होगा जब यीशु आएंगे और उनके दूसरे मित्रों की कब्रें खुल जाएंगी -- और वे उससे हवा में मिलने के लिए जी उठेंगे!

यह एक दिलासा देनेवाला संदेश है जो पौलुस प्रेरित ने प्राचीन मसीहियों के साथ बांटा था।

97

(मूलपाठः १ थिस्सलुनीकियों ४:१३, १६)

"हे भाइयों, हम यह नहीं चाहते, कि तुम उनके विषय में जो सोते हैं, अज्ञान रहो,

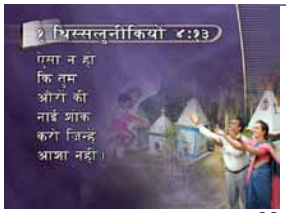

98

ऐसा न हो कि तुम औरों की नाई शोक करो जिन्हें आशा नहीं!"

१ थिस्सलुनीकियों ४:१३

पौलुस हमसे कहता है कि यीशु क्या करेंगे जब वे दूसरी बार आएंगेः

99

"क्योंकि प्रभु ही स्वर्ग से उतरेगा, उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा,

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

100

और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे।"

१ थिस्सलुनीकियों ४:१६

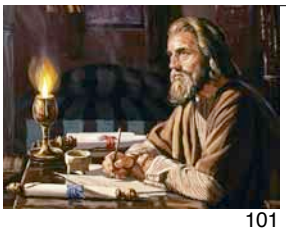
101

पौलुस उन घटनाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन करता है जो यीशु के आने पर होंगी :

102

(मूलपाठः १ कुरिन्थियों १५:५१-५५)

"देखो, मैं तुम से भेद की बात कहता हूँ कि हम सब तो नहीं सोएंगे, परन्तु सब बदल जाएंगे-

103

यह क्षण भर में, पलक मारते ही आखिरी तुरही फूंकते ही होगा।

104

क्योंकि तुरही फूंकी जाएगी और मुर्दे अविनाशी दशा में उठाए जाएंगे और हम बदल जाएंगे।"

१ कुरिन्थियों १५:५१, ५२

पौलुस हमें बताता है कि हम कैसे बदल जाएंगे।

105

"क्योंकि अवश्य है कि यह नाशमान देह अविनाश को पहिन ले और मरनहार देह अमरता को पहिन ले।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

106

और जब यह नाशमान अविनाश को पहिन लेगा, और यह मरनहार अमरता को पहिन लेगा,

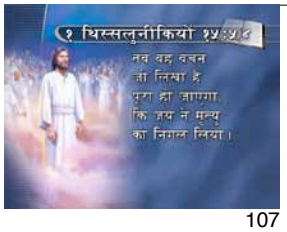

107

तब वह वचन जो लिखा है पूरा हो जाएगा, कि जय ने मृत्यु को निगल लिया।

108

"हे मृत्यु तेरी जय कहाँ रही?"

१ कुरिन्थियों १५:५३-५५

109

यीशु ने अपने शिष्यों से कहा था कि सब कब्र से जी उठेंगे।

110

(मूलपाठः यूहन्ना ५:२८,२९)

"इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे

111

जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे,

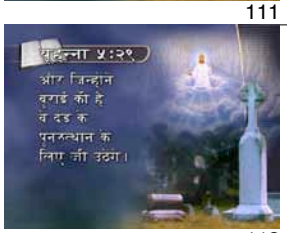

112

और जिन्होंने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे।"

यूहन्ना ५:२८, २९

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

113

एक क्षण के लिए सोचिए: यदि लोग मृत्यु के बाद स्वर्ग या नरक में जाते तो फिर धर्मी और अधर्मी को पुनरुत्थान की क्या आवश्यकता थी?
यीशु अपने दूसरी बार आने के बारे ऐसा क्यों कहते हैं?

114

(मूलपाठ : प्रकाशितवाक्य २२ : १२)
"और देखो, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ, और हर एक के काम के अनुसार बदला देने के लिए प्रतिफल मेरे पास है।"
प्रकाशितवाक्य २२:१२

115

यह कितनी सरल बात है!
जब लोग मरते हैं, तो वे सो रहे हैं। जब तक यीशु नहीं आ जाते वे अपने कामों और परेशानियों से आराम कर रहे हैं।

116

यीशू क्यों आ रहे हैं? वह पुनरुत्थान कराने और उन सब लोगों से मिलने आ रहे हैं जिन्होंने उनके बलिदान को स्वीकार किया है। वे अपने विश्वासी अनुयायियों का स्वागत करने आ रहे हैं। इस सुसमाचार को सुनिए!

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

117

(मूलपाठ : १ थिस्सलुनीकियों ४:१७)
"तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उन के साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें।

118

और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।"
१ थिस्सलुनीकियों ४:१७

119

हमने देखा कि बचाए गए सभी लोगों का शरीर बिल्कुल यीशु की तरह प्रतापी हो जाएगा, और वे अमरता (अनन्त जीवन) को प्राप्त करेंगे ताकि वे प्रभु के साथ सदा रहें।

120

कोई भी पूछ सकता है,"कि कूस पर उस डाकू का क्या होगा?"

121

आइए देखें कि उस डाकू के विषय में जो प्रतिज्ञा यीशु ने उस से की थी उसके विषय में वास्तव में बाइबिल हमें क्या सिखाती है।
यीशु दो डाकुओं के बीच कूस पर लटकाये गये थे।
ताकि जो उसे कूस पर लटका रहे थे वे उसकी पहचान अपराधियों से कर सकें।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

122

मरकुस की पुस्तक कहती है कि पहले दोनों डाकुओं ने यीशु पर व्यंग किया और कहा कि यदि सचमुच उसके पास शक्ति है तो वह अपने आप को और हमें छुड़ा ले।

तब उसमें से एक डाकू ने प्रायश्चित किया और उद्धार के लिए पुकारा।

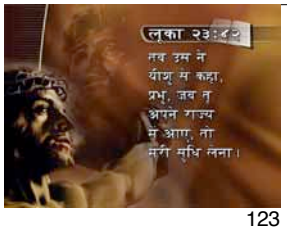

123

(मूलपाठः लूका २३:४२,४३)

"तब उस ने यीशु से कहा, प्रभु, जब तू अपने राज्य में आए, तो मेरी सुधि लेना।

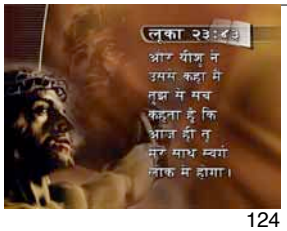

124

और यीशु ने उससे कहा मैं तुझ से सच कहता हूँ कि आज ही तू मेरे साथ स्वर्ग लोक में होगा।"

लूका २३:४२,४३

125

आइए फिर से उस प्रतिज्ञा को देखें।

हाँ, मित्र!

आज इसी समय आप भी यह आश्वासन प्राप्त कर सकते हैं।

मसीह में आश्वासन है।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

126

यद्यपि मसीह उस दिन मरे होगें, और रविवार की सुबह तक कब्र में लेटे होगें, पर उन्होंने कब्र से हमें बचाने की जिम्मेदारी ली।

127

(मूलपाठः लूका २३:४३)

(दृश्य)

मरने वाले डाकू के लिए क्या ही आश्चर्यजनक आश्वासन था! जब उसके लिए कोई आशा नहीं थी और जबकि उसकी आत्मा चारों ओर के अंधकार से भयभीत हो रही थी तब यीशु ने उसे आशा की किरण दिखाई। यीशु ने डाकू से उसी घड़ी प्रतिज्ञा की, "मैं आज कह रहा हूँ (या इसी समय मैं तुझसे कह रहा हूँ) "तू मेरे साथ स्वर्गलोक में होगा।"

128

कुछ लोग सोचते हैं कि यीशु उस डाकू से प्रतिज्ञा कर रहे थे कि वह तुरन्त स्वर्ग में जाएगा। परन्तु जब यीशु की मृत्यु हुई तब वह स्वयं भी तुरन्त स्वर्ग को नहीं गये।

129

बाइबिल हमें बताती है वे शुक्रवार को मरे और उन्हें उधार ली गई कब्र में रखा गया।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

130

रविवार की सुबह, यीशु मरियम को दिखाई दिये और वह उनकी उपासना करना चाहती थी, परन्तु उन्होंने उसे मना किया क्योंकि वह अब तक ऊपर स्वर्ग में नहीं गये थे। उन्होंने जो कहा उसे सुनिए:

131

(मूलपाठ : यूहन्ना २० : १७)

"... मैं अब तक पिता के पास ऊपर नहीं गया ..."

यह रविवार की सुबह थी और उन्होंने कहा कि वे अब तक अपने पिता के पास ऊपर नहीं गये!

यूहन्ना २०:१७

यीशु शुक्रवार को स्वर्ग में नहीं हो सकते थे!

132

बाइबिल हमें बताती है कि वह डाकू भी शुक्रवार को स्वर्ग में नहीं था।

133

(मूलपाठ : यूहन्ना १९:३१-३३)

"इसलिये कि वह तैयारी का दिन था, ताकि सब्त के दिन उनके शरीर कूसों पर न रहें

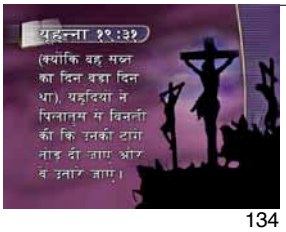

134

(क्योंकि वह सब्त का दिन बड़ा दिन था), यहूदियों ने पिलातुस से विनती की कि उनकी टांगे तोड़ दी जाएं और वे उतारे जाएं।"

यूहन्ना १९ : ३१

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

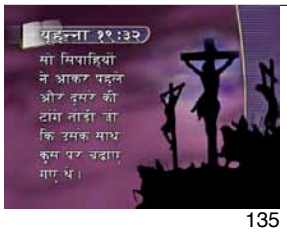

135

सो सिपाहियों ने आकर पहले और दूसरे की टांगे तोड़ी जो कि उसके साथ कूस पर चढ़ाए गए थे।

136

परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है तो उस की टांगे न तोड़ी।"

यूहन्ना १९:३१-३३

137

यहाँ हम देखते हैं कि उन्होंने उन दो डाकुओं की टांगे तोड़ दी ताकि वे भाग न सकें,

138

परन्तु उन्होंने यीशु की टांगे नहीं तोड़ी क्योंकि वह शुक्रवार को ही मर चुका था।

इसलिए न तो मसीह न ही डाकू शुक्रवार के दिन स्वर्ग में थे।

139

यीशु ने हमें स्वतंत्र करने और हम में सुधार लाने के लिए मूल्य चुकाया।

140

सबसे महान उपहार जो परमेश्वर मनुष्य जाति को दे सकता है वह है अनन्त जीवन, मृत्यु के ऊपर जय!

इसके बिना सभी उपहार व्यर्थ हैं!

और यह उपहार माँगने के साथ ही आपका है!

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

141

आप का यह निर्णय आपके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण निर्णय होगाः आपका अनन्त भविष्य इस निर्णय पर निर्भर करता है!

142

अनन्त जीवन का अमूल्य उपहार उन सब के लिए है जो मसीह को अपना उद्धारकर्त्ता और प्रभु स्वीकार करते हैं। और उसका मूल्य? केवल एक समर्पित हृदय। एक साफ और परिवर्तित हृदय। क्रूस पर एक घमण्ड़ी और स्वार्थी हृदय नया बन जाता है। इससे अधिक वह क्या कर सकता था।

143

आप चाहें तो अनन्त जीवन आप का हो सकता है।

144

क्योंकि यीशु जीवित हैं इसलिये हमारे पास महिमायुक्त आशा है -- ऐसी आशा जो मृत्यु के बाद जीवन की है!

145

एक शाम अमरीका के पूर्वी भाग के एक छोटे से शहर में धर्म सभाएं रखी गई। उन सभाओं में एक जवान पुरूष अत्याधिक निराश होकर घूम रहा था।

१३ - मृत्यु के पश्चात क्या होता है?

146

वह सभागृह एक कब्रिस्थान के समीप था। सभागृह में प्रवेश करने से पहले वह जवान कब्रिस्थान से धीरे धीरे चलता हुआ आया। जीवन के अर्थ के विषय में उसके मन में कई प्रश्न थे। वह क्षमा प्राप्त करने और मन की शान्ति के लिए इच्छुक था। जब वह मृत्यु के विषय में सोच रहा था तो वह किसी और चीज की अपेक्षा अनन्त जीवन का आश्वासन चाहता था।

147

उस शाम बाईबिल के अध्ययन का विषय था: "मृत्यु के बाद जीवन की आशा।" वह जवान दर्शकों में बैठकर एकाग्रचित होकर सुनने लगा। उसी रात आशा की नई किरण उसके हृदय में जाग उठी। उसने अपना जीवन मसीह को सौंप दिया। उसी रात उसने मसीह को ग्रहण कर लिया जो उसके लिये मरा और उसे अनन्त जीवन देने के लिए मृतकों में से जी उठा। उसी रात उसका सम्पूर्ण जीवन इस जीवित मसीह के द्वारा बदल गया। उसी रात उसकी आत्मा में शान्ति भर गई।

148

आपको भी यह शान्ति मिल सकती है -- यह आशा, अनन्त जीवन का आश्वासन, और मृत्यु के बाद जीवन की आशा। यदि आप यह आश्वासन चाहते हैं तो क्या आप इसी समय हमारे साथ प्रार्थना के लिए खड़े होना चाहेंगे?